Result Mitra Daily Magazine

भारत में चीता

❖ हालिया संदर्भ :

- आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार हाल ही में मध्यप्रदेश के कुनो राष्ट्रीय उद्यान (K.N.P.) में पवन नाम चीता की मौत हो गई।
- पवन नामीबिया से लाए गए चीतों में से एक था।
- कुछ सप्ताह पहले ही अफ्रीका से लाये गए चीता गामिनी (मादा) के 5 महीने के बच्चे की मौत KNP में ही हुई थी।
- मृत चीते को जलाशय के पास पाया गया था, जिसका आधा ऊपरी हिस्सा पानी में डूबा हुआ था और संभवतः इसकी मौत भी डूबने से हुई।

❖ चीतों का स्थानांतरण योजना :

- KNP में तेंदुओं की संख्या एवं घनत्व काफी ज्यादा है। साथ ही चीतों के लिये यहाँ शिकार-आधार (Prey-base) सीमित है, जिससे तेंदुओं एवं चीतों के बीच आपसी संघर्ष की घटना बढ सकती है।
- ऐसी स्थिति में केन्द्र की चीता परियोजना संचालन समिति चीतों को गांधी सागर वन्यजीव में स्थानांतरित करने की योजना पर कार्य कर रही है ताकि संघर्ष में कमी एवं शिकार की संभावनाओं को बढाया जा सके।

❖ सह-अस्तित्व :

- अफ्रीका में चीते तेंदुओं एवं शेरों के साथ सह-अस्तित्व में रह रहे हैं, लेकिन भारत में KNP में तेंदुओं की उच्च चीतों के लिये शिकार बायोमास को कम कर सकता है।
- "भारत में तेंदुओं की स्थिति नामक 2024 के रिपोर्ट" के अनुसार, देश में सबसे ज्यादा तेंदुए मध्यप्रदेश में है।
- 2018 में 3421 तेंदुए मध्यप्रदेश में थे, जो 2024 तक बढकर 3907 हो गए।
- गांधी सागर वन्यजीव अभ्यारण्य में 64 तेंदुए थे, जिनमें से 15 को स्थानांतरित किया जा चुका है।

❖ वर्चस्व की जंग :

- विशेषज्ञों के अनुसार शेर एवं तेंदुए जैसे शिकारियों की उपस्थिति चीते के क्षेत्र एवं शिकार प्रणालियों को प्रभावित करती है।
- चीते अपनी असाधारण गति और चपलता के लिये प्रसिद्ध है, जो मुख्यतः खुले क्षेत्रों में शिकार के लिये अनुकूलित होते हैं।
- चीते के विपरीत, तेंदुए विभिन्न प्रकार के आवासों एवं शिकार क्षेत्रों के प्रति अनुकूलित होते हैं।
- KNP में कई बार चीतों एवं तेंदुओं के बीच मुठभेड हो चुकी है।

❖ शिकार की कमी :

- गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य में चिंकारा एवं चीतल जैसे जानवरों, जो तेंदुए एवं चीतों के लिये मुख्य आहार होते हैं, के भी घनत्व में कमी है।
- KNP में प्रति वर्ग km औसतन 17 शिकार (Prey) जानवर पाए गए। आदर्श रूप से प्रति वर्ग km 36-60 चीतल होने चाहिए, जबकि यह संख्या केवल 18-20 ही थी।
- विशेषज्ञों के अनुसार, वन्यजीव अभयारण्य एवं KNP में घासों के विभिन्न प्रजातियों सहित चिंकारा एवं चीतल जैसे शाकाहारी जानवरों के इन-सीटू संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए ताकि KNP का समस्त पारितंत्र बेहतर हो सके।

❖ बढती मौतें :

- जब से भारत में चीतों की पुर्नस्थापना हुई है, तब से 8 चीते एवं 3 शावकों की मोत हो चुकी है।
- मौतों के प्रमुख कारणो में किसी संक्रमण, कार्डियो पल्मोनरी फेलियर एवं सेप्टीसीमिया शामिल है।
- शावकों की मौत का प्रमुख कारण डी-हाइड्रेशन था।

Result Mitra TM

❖ मृत चीतों के नाम :

1. साशा (सबसे पहली मौत)
2. उदय
3. दक्षा
4. तेजस
5. शौर्य
6. पवन

❖ सेप्टीसीमिया :

- यह एक गंभीर बैक्टीरिया जनित रक्त संक्रमण है।
- यह संक्रमण तब होता है, जब बैक्टीरिया शरीर के किसी हिस्से जैसे-मूत्राशय, किडनी, फेफडे या त्वचा के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर जाता है।
- यह बेहद खतरनाक एवं जानलेवा होता है तथा चरम अवस्था में सेप्सिस में बदल जाता है।
- सेप्सिस की स्थिति में शरीर के उत्तक (Tissue) एवं अंग खराब होने लगते हैं एवं मौत का कारण बनते हैं।
- सेप्सिस जीवाणु के साथ-साथ वायरस, प्रोटोजोआ एवं कवक आदि के रक्त-प्रवाह संक्रमण से भी हो सकता है।
- सेप्टीसीमिया या सेप्सिस संक्रमण मनुष्यों में भी होता है और मनुष्यों में यह सेप्टिक शॉक, अंग विफलता एवं यहाँ तक की मृत्यु का भी कारण बन सकता है।
- चीतों में सेप्टीसीमिया संक्रमण का प्रमुख कारण उनकी निगरानी के लिये प्रयोग में लाए गए 'रेडियो कॉलर' है।
- रेडियो कॉलर, चीतों के कंधे या गर्दन के पास लगाए जाने वाला छोटा रेडियो ट्रांसमीटर होता है, जो उनकी गतिशीलता, व्यवहार, जनसंख्या एवं अन्य प्रकार के डेटा को उपलब्ध करवाता है।
- रेडियो कॉलर से चीतों के गर्दन पर घाव हो जाते हैं, जो सेप्टीसीमिया का कारण बनता है।
- सेप्टीसीमिया को सामान्यतः सेप्सिस सिंड्रोम, सिस्टेमिक इंफ्लेमेटरी रिस्पॉन्स सिंड्रोम (SIRS) आदि नामों से भी जाना जाता है।

❖ KNP :

- मध्यप्रदेश का संरक्षित क्षेत्र,
- 1981 में वन्यजीव अभयारण्य के रूप में स्थापित,
- 2012 में राष्ट्रीय उद्यान (National Park) बना,
- विंध्याचल पहाडी के उत्तरी भाग में स्थित,

Result Mitra

- मध्यप्रदेश के श्योपुर एवं मुरैना जिले में विस्तार,
- चंबल की सहायक नदी, कुनो के नाम पर नामकरण,
- 404 वर्ग km का क्षेत्र,
- भेडिया, नीलगाय, तेंदुआ, चीतल, बंदर जैसे जानवर की प्रमुखता।
- 18 Sep 2022 को 'प्रोजेक्ट चीता' के तहत नामीबिया से लाए गए 8 चीतों को इसी में पुनर्स्थापित किया गया था।
- बाद में दक्षिण अफ्रीका से भी 12 चीतों को यहाँ लाया गया था।
- वर्तमान में यहाँ 12 चीते एवं 12 शावक है।

❖ गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य :

- मध्यप्रदेश के मंदसौर एवं नीमच जिले में विस्तारित,
- राजस्थान से सीमा साझाकरण,
- 1974 में वन्य जीव अभयारण्य के रूप में मान्यता,
- 369 km^2 क्षेत्र में विस्तार,
- चंबल नदी यहाँ से बीचोंबीच गुजरती है।

❖ चीता (Cheetah) :

- सबसे तेज दौडने वाला स्थलीय जानवर,
- साइंटिफिक नाम-एसिनोनिक्स जुबेटस,
- वर्तमान में चीते की दो उप-प्रजातियाँ पाई जाती है -
- एसिनोनिक्स जुबेटस वेनेटिकस - एशियाई चीता
- एसिनोनिक्स जुबेटस - अफ्रीकी चीता
- एशिया में यह ईरान में पाए जाते हैं।
- एशियाई चीते अफ्रीकी चीते की तुलना में थोडे छोटे होते है।
- IUCN की Red List में "गंभीर रूप से संकटग्रस्त" श्रेणी में शामिल,

❖ भारत में चीता-विलुप्ति :

- शिकार भारतीय राजघरानों का शौक था और शेर या बाघ की तुलना में चीता का शिकार करना आसान था।
- भारत में चीतों के शिकार से संबंधित पहला उपलब्ध रिकॉर्ड संस्कृत ग्रंथ "मानसोल्लास" है, जिसे कल्याणी चालुक्य के राजा सोमेश्वर-III ने लिखा था।
- मुगल साम्राज्य के दौरान शिकार विशेष गतिविधि बन गई।

Result Mitra TM

- अकबर के शासनकाल में 9000 से ज्यादा चीते पकडे गए, जिन्हें शाही शिकार में भाग लेने के लिये प्रशिक्षित किया गया।
- सम्राट जहाँगीर ने चीतों की मदद से पालम क्षेत्र में 400 हिरणों को पकडवाया।
- ब्रिटिश दौर में चीतों का बहुत ज्यादा शिकार तो नहीं किया गया लेकिन कृषि के व्यवसायीकरण एवं परिवहन-मार्गों के विकास ने चीते के प्राकृतिक आवास में कमी कर दी, जिससे वे विलुप्ति की ओर अग्रसर हो गए।
- 20वीं सदी आते-आते भारत में जंगली चीते दुर्लभ होते गए।
- मध्यप्रदेश के राजा रामानुज प्रताप सिंह देव ने 1947 में भारत में दर्ज किए गए अंतिम तीन चीतों को मार डाला था।
- 1952 में भारत सरकार ने आधिकारिक रूप से चीते को देश में जंगली रूप में विलुप्त घोषित कर दिया। इस प्रकार बडे मांसाहारी जानवरों में चीता एकमात्र विलुप्त होने वाला जानवर बना।

❖ पुनर्स्थापना :

- 1949-1989 के बीच भारतीय विडियाघरों में 25 चीते थे, जो संभवतः अफ्रीकी देशों से लाए गए थे।
- आंध्रप्रदेश का वन्यजीव बोर्ड 1955 में राज्य के 2 जिलों में चीतों की पुनर्स्थापना का सुझाव देने वाला प्रथम संगठन था।
- 1970 के दशक में पर्यावरण मंत्रालय ने ईरान से चीते मांगे थे, लेकिन ईरानी क्रांति के फलस्वरूप ईरानी शासन में परिवर्तन हो गया और यह प्रोजेक्ट अधूरा रह गया।
- 2009 में जयराम रमेश की अध्यक्षता में वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने चीता-पुनर्स्थापना की कार्य में तेजी दिखाई और कई जगहों का चयन भी किया गया।
- अंततः सितम्बर 2022 में भारत में चीतों को पुनर्स्थापित किया गया, जिसमें राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) एवं मध्यप्रदेश के वन विभाग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- दुनिया की पहली-अंतर-महाद्वीपीय स्थानांतरण परियोजना के रूप में प्रोजेक्ट-चीता जाना गया।

Result Mitra